Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-4 | Oct-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

महाराष्ट्र के किसानों की आत्महत्याएँ - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रामेश्वर एम. मोरे

एस.बी.पी. कॉलेज, मंद्रुप,ता.द. सोलापूर,जि. सोलापूर, महाराष्ट्र.

प्रस्तावना- आत्महत्या की समस्याने वर्तमानस्थिती में गंभीर स्वरुप धारण किया हैं। नॅशनल क्राईम रेकॉर्ड ब्युरो के आंकडे अनुसार यह स्पष्ट होता हैं कि, भारत में १९९८ से आज तक हर साल एक लाख से भी जादा लोगों ने आत्महत्याएँ की हैं। साल २०१२ में १,३५,४४५ लोगों ने आत्महत्या की हैं। इसमें ४६९९२ महीलाएँ थी और ८८४५३ पुरुष थे। साल २०१२ में हर दिन ३७१ लोगों ने आत्महत्या की हैं। इन आत्महत्याओं को पारिवारिक समस्याएँ, निर्धनता, ऋणग्रस्तता, मादक द्रव्य व्यसन, असाध्य रुग्णावस्था आदि प्रमुख कारण जबाबदार थे। भारत की इन आत्महत्याओं में जादातर आत्महत्या कृषि क्षेत्र में किसानों ने की हैं। भारत एक कृषिप्रधान राष्ट्र होकर भी यहाँ किसान बहुत बढ़ी संख्या में आत्महत्या कर रहें हैं, यह बहुत गंभीर बात हैं। इसलिए प्रस्तुत शोधपत्रिका में किसानों के आत्महत्या का अध्ययन किया हैं।

उद्देश (Objective) :-

१. किसानों के आत्महत्या के कारणों का पता लगाना।
२. किसानों की आत्महत्या रोकने के लिए उपाय बताना।

अनुसंधान विधी (Research Methodology):-

यह शोधपत्रिका प्रमुखरुप से दुय्यम तथ्यों पर आधारित हैं। महाराष्ट्र के किसानों के आत्महत्या का अध्ययन अनेक तज्ञोने किया हैं। उनका आधार लेकर अध्ययन किया हैं।

भारत के किसानों की आत्महत्याएँ

(Farmers Suicide In India)

भारत में किसानों की आत्महत्या की समस्या प्रमुख रुप से सन १९९० से तिव्र बन गई हैं। भारत में सन १९९७ से २०१२ तक २,६०,२४५ किसानों ने आत्महत्या की हैं। उनके प्रतिवर्ष के आंकडे निम्नलिखित हैं।

अ.क्र.	साल	पुरुष	महिलाएँ	ूल	भारत के कुल आत्महत्याओं में किसान आत्महत्याओं का प्रमाण
१	१९९७	११२२९	२३९३	१३६२२	१४.२ %
२	१९९८	१२९८६	३०२९	१६०१५	१५.२ %
३	१९९९	१३२७८	२८०४	१६०८२	१४.५%
४	२०००	१३५०१	३१०२	१६६०३	१५.२ %
५	२००१	१३८२९	२५८६	१६४१५	१५.१ %
६	२००२	१५३०८	२६६३	१७९७१	१६.२ %
७	२००३	१४७०१	२४६३	१७१६४	१५.५ %
८	२००४	१५९२९	२३१२	१८२४१	१६.० %
९	२००५	१४९७३	२१५८	१७१३१	१५.० %
१०	२००६	१४६६४	२३९६	१७०६०	१४.४%
११	२००७	१४५०९	२१२३	१६६३२	१३.६ %
१२	२००८	१४१४५	२०५१	१६१९६	१३.० %
१३	२००९	१४९५१	२४१७	१७३६८	१३.७ %
१४	२०१०	१३५९२	२३७२	१५९६४	११.९ %
१५	२०११	१२०७१	१९५६	१४०२७	१०.३ %

१६	२०१२	११९५१	१८०३	१३७५४	११.४ %
ूल	**१६**	**२,२१,६१७**	**३८,६२८**	**२,६०,२४५**	**१३.८%**

उपरोक्त आकडों से भारत के किसानों की आत्महत्या समस्या की गंभीरता स्पष्ट होती हैं। भारत में किसानों की आत्महत्या में महिलाओं ा तुलना में पुरुष किसानों के आत्महत्या का प्रमाण बहुत अधिक है। भारत में सबसे अधिक किसानों की आत्महत्याएँ २००४ में हुई हैं। २००४ में १८,२४१ f सानों ने आत्महत्याएँ कि हैं। भारत की कुल आत्महत्या में इसका प्रमाण १६ % इतना अधिक था। १९९७ से २०१२ तक हर साल १३,००० से १८,००० तक किसानों ने आत्महत्याएँ कि है। इसका भारत की कुल आत्महत्या में ११ % से १६ % प्रमाण है। भारत में १९९७ से २००४ तक किसानों के आत्महत्या का प्रमाण बढता ही गया है। २००५ के बाद किसान आत्महत्याओं का प्रमाण कुछ प्रतिशत कम हुआ है। लेकीन अभी भी आत्महत्याएँ बहुत बढी संख्या में हो रही है। साल २०१२ में महाराष्ट्र में ३७८६, आंध्रप्रदेश में २५७२, कर्नाटक में १८७५, मध्यप्रदेश में ११७२, केरळ में १०८१, उत्तरप्रदेश में ७४५, गुजरात में ५६४, तामिळनाडू में ४९९, आसाम में ३४४, हरियाणा में २७६, राजस्थान में २७०, ओरिसा में १४६, इ ाारखंड ११९, पंजाब में ७५, बिहार में ६८, हिमाचल प्रदेश में २९, सिक्कीम में १९, त्रिपुरा में १८, उत्तराखंड में १४, अरुणाचल प्रदेश में ११, मेघालय में १०, मिझोराम में १०, जम्मु- ाश्मिर में १०, ना ालँड में ०९, छत्तीसगड़ में ०४ किसानों ने आत्महत्या की है। भारत में महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, र्नाटक, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगड़ इन राज्यों में अधिकतम किसानों ने आत्महत्याएँ की है।

महाराष्ट्र के किसानों की आत्महत्याएँ

(Farmers Suicides in Maharashtra)

भारत मे किसानों की आत्महत्या में महाराष्ट्र सबसे आगे हैं। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में बहुत बडी संख्या में किसानों ने आत्महत्या की हैं। विदर्भ के बाद मराठवाडा क्षेत्र में भी बहुत जादा किसानों ने आत्महत्या की हैं। पश्चिम महाराष्ट्र, उत्तर महाराष्ट्र में भी अनेक किसानों ने आत्महत्या की हैं। महाराष्ट्र के किसानों के आत्महत्या के आंकडे निम्नलिखीत हैं।

अ.क्र.	**साल**	**पुरुष**	**महिलाएँ**	**ूल**	**भारत के किसान आत्महत्याओं में महाराष्ट्र किसान आत्महत्याओं का प्रमाण**
१	१९९७	१६००	३१७	१९१७	१४.० %
२	१९९८	१९३८	४७१	२४०९	१५.० %
३	१९९९	२०५०	३७३	२४२३	१५.० %
४	२०००	२४९२	५३०	३०२२	१८.२ %
५	२००१	२९४५	५९१	३५३६	२१.५ %
६	२००२	३१५५	५४०	३६९५	२०.५ %

७	२००३	३३८१	४५५	३८३६	२२.३ %
८	२००४	३७९९	३४८	४१४७	२२.७ %
९	२००५	३६३८	२८८	३९२६	२२.९ %
१०	२००६	४१११	३४२	४४५३	२६.१ %
११	२००७	३९६८	२७०	४२३८	२५.४ %
१२	२००८	३५७३	२२९	३८०२	२३.४ %
१३	२००९	२६९२	१८०	२८७२	१६.५ %
१४	२०१०	२९४७	१९४	३१४१	१९.६ %
१५	२०११	३०९३	२४४	३३३७	२३.७ %
१६	२०१२	३४८३	३०३	३७८६	२७.५ %
ूल	**१६**	**४८,८६५**	**५,६७५**	**५४,५४०**	**२०.९ %**

उपरोक्त आंकडों से महाराष्ट्र के किसानों की आत्महत्या समस्या की गंभीरता स्पष्ट होती हैं। महाराष्ट्र में साल १९९७ से २०१२ तक ५४,५४० किसानों ने आत्महत्या की हैं। इसमें ४८,८६५ पुरुष किसानों ने एवं ५,६७५ महिला किसानों ने आत्महत्याएँ कि है। देश के कुल किसान आत्महत्या में महाराष्ट्र के किसान आत्महत्या का प्रमाण सबसे अधिक यानी की २०.९५ % इतना है। महाराष्ट्र में साल २००० से २०१२ तक केवल २००९ को छोडकर हर साल ३००० से ज्यादा किसानों ने आत्महत्याएँ कि है। सबसे अधिकतम आत्महत्याएँ साल २००६ में हुई है। साल २००६ में ४,४५३ किसानों ने आत्महत्या की है। महाराष्ट्र के कुल आत्महत्याओं में भी किसानों के आत्महत्याओं का प्रमाण अधिकतम है। महाराष्ट्र में अभी भी हर दिन किसान आत्महत्या कर रहे हैं।

महाराष्ट्र के किसानों के आत्महत्या का अध्ययन अनेक तज्ञो ने किया हैं। जो संक्षिप्त में निम्नलिखीत प्रकार से हैं।

बी.बी. मोहंती ने (१९९९) डरखीम के समाजशास्त्रीय दृष्टीकोन से अमरावती एवं यवतमाल जिले के ६६ किसानों के आत्महत्या का अध्ययन किया हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, उत्पादन में हुई घट, उत्पादित माल को मिला कम मूल्य एवं ऋणग्रस्तता यह कारण किसानों के आत्महत्या को जबाबदार रहें है।

डॉ.एम.एस.स्वामीनाथन ने (२००५) विदर्भ क्षेत्र के आत्महत्याग्रस्त परिवार का अध्ययन किया, उनके अनुसार किसानों के आत्महत्याओं ा सरकार की दोषयुक्त निती जबाबदार हैं।

अजय दांडेकर एवं अन्य ने (२००५) विदर्भ, मराठवाडा एवं खानदेश के ३६ आत्महत्याओं का अध्ययन किया हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, ऋणग्रस्तता एवं निर्धनता प्रमुख रुप से किसानों के आत्महत्या के कारण हैं।

श्रीजित मिश्रा एवं अन्य ने (२००६) वर्धा, यवतमाल एवं वाशिम जिले के ११६ किसानो के आत्महत्या का अध्ययन □िया हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, किसानों के आत्महत्या को प्रमुख रुप से सामाजिक एवं आर्थिक कारण जबाबदार रहे हैं। इनके अनुसार आत्महत्या □ी कौनसा भी एक कारण जबाबदार न होकर कम से □म दो कारण या जादा से जादा नौ कारण जबाबदार रहे हैं। उसमे प्रमुख रुप से ऋणग्रस्तता, पारिवारिक संघर्ष, व्यसन, बेटी अथवा बहन के ब्याह की चिंता आदि थे।

डॉ.कुरुलकर आर.पी. एवं अन्य ने (२००६) मराठवाडा के आठ जिले में हुई १३५ किसान आत्महत्याओं का अध्ययन किया हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, किसानों के आत्महत्याओं का ऋणग्रस्तता यह प्रमुख कारण था। आत्महत्या करने वालो में २१ से ४० आयु समूह □ किसानों की संख्या ३७.६% थी।

यशवंतराव चव्हाण अकॅडमी ऑफ डेव्हलपमेंट ॲडमिनीस्ट्रेशन (२००६) इस संस्था द्वारा यवतमाल जिले के १४८ आत्महत्याओं का अध्ययन किया हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, छोटे किसानों ने बडी संख्या में आत्महत्या की हैं। उनका कूल आत्महत्या में प्रमाण ४१.२२% हैं। इन आत्महत्याओं को ऋणग्रस्तता, सावकारोंद्वारा हुआ छल, नापिकी यह कारण जबाबदार रहें हैं।

पी. साईनाथ (२००७) ने महाराष्ट्र को **Graveyard of farmers** ऐसा संबोधित किया हैं। उनके अनुसार देश में सब से बुरा हाल विदर्भ के किसानों का हैं। उनके अनुसार किसानों के आत्महत्या को ऋणग्रस्तता, खेती में जादा खर्चा और कम उत्पन्न, उत्पादन को मिलने वाली □म किमतें आदि कारण जबाबदार हैं।

डॉ. नरेंद्र जाधव ने (२००८) विदर्भ के किसान आत्महत्याओं का अध्ययन किया हैं। उनके अनुसार किसानों की आत्महत्या को ऋणग्रस्तता, पारिवारिक संघर्ष, व्यसन और स्वास्थ्यसबंधी कारण जबाबदार हैं।

ज्ञानदेव तळुले एवं ओंकार रसाळ ने (२००९) अकोला, अमरावती, यवतमाल, वाशिम, वर्धा, बुलढाणा, औरं□ाबाद, बीड एवं अहमदनगर जिले के २०० किसान आत्महत्याओं का अध्ययन किया हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, ७२% किसान जिरायती खेती करते थे। उनके अनुसार किसानों की आत्महत्याओं को आर्थिक दुरावस्था, ऋणग्रस्तता, नापिकी आदि प्रमुख कारण जबाबदार हैं।

डॉ. भगवान डोंगरे ने (२०११) जालना जिले के ९० किसान आत्महत्याओं का अध्ययन किया हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, किसान आत्महत्याओं की प्रमुख रुप से खेती खर्च में हुई वृध्दी और उत्पादन को मिलने वाली कम किंमत, ऋणग्रस्तता, पारिवारिक संघर्ष आदि □ारण जबाबदार हैं।

डॉ. सतीश गव्हाणे ने (२०१२) बीड जिले के १०० किसान आत्महत्याओं का अध्ययन किया हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि, किसानों की आत्महत्याओं जागतिकीकरण एवं उदारीकरण की निती जबाबदार हैं।

उपसंहार (Conclusion):-

उपर्युक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है की, किसानों की आत्महत्याएँ महाराष्ट्र में एक गंभीर समस्या बन गयी हैं। महाराष्ट्र में १९९७ से २०१२ तक ५४,५४० किसानों ने आत्महत्याएँ की हैं। आत्महत्या करनेवालो किसानों में कपास एवं सोयाबिन उत्पादन करनेवालो की संख्या ज्यादा हैं। आत्महत्या करनेवालो में ज्यादातर किसान जिरायती खेती करनेवाले हैं। आत्महत्या करनेवाले किसानों में छोटे किसानों की संख्या बहुत ज्यादा हैं। महाराष्ट्र में किसानों की आत्महत्या को ऋणग्रस्तता, निर्धनता, पारिवारिक संघर्ष, बहेन या बेटी के ब्याह की चिंता, उत्पादन में कमी, उत्पादन खर्च में हुई वृध्दी एवं उत्पादित माल को मिलने वाली कम किमत, व्यसन, सरकार की दोषयुक्त नीती, स्वास्थ्यसंबंधी समस्याएँ, सामाजिक प्रतिष्ठा का ऱ्हास, साहुकारोंद्वारा होने वाला शोषन, पुरक उद्योगोंका अभाव, आर्थिक दुरावस्था, सिंचन की कमी, सबसिडी में कमी अवर्षण एवं अतिवर्षण, बढती महंगाई व्यापारीयों द्वारा होने वाला शोषन, जागतिकीकरण एवं उदारीकरण की निती, किसानों की उदासिनता आदि प्रमुख कारण जबाबदार हैं। इन विविध कारणों से आज भी महाराष्ट्र के किसान आत्महत्या कर रहे है। आत्महत्या करनेवाले किसानों के परिवार की स्थिती अभी भी बहुत गंभीर हैं। वह आज भी निर्धनता एवं ऋणग्रस्तता के जाल में फसे हुए हैं।

किसानों की आत्महत्या रोकने के लिए उपायः -

(Remedies of farmers Suicides)

किसान आत्महत्या की समस्या समाप्त करने के लिए कुछ उपाय करना जरुरी हैं। जो निम्नलिखीत हैं।

१) आत्महत्याग्रस्त किसानों के परिवार को आर्थिक मद्द करना।
२) किसानों को निर्धनता एवं ऋणग्रस्तता से मुक्त करना।
३) उत्पादित माल को उत्पादन □र्च पर आधारित मूल्य देना।
४) किसानों को कम ब्याज से ऋण देना।
५) शिक्षा, ब्याह आदि के लिए भी कर्ज देना।
६) सेंद्रिय खेती का प्रचार-प्रसार करना।
७) □ती संबंधी पुरक व्यवसाय करने के लिए प्रोत्साहन देना।
८) सरकार की खेती संबंधी नीतीयों मे परिवर्तन करना।
९) पिक बिमा योजना का विस्तार करना।
१०) आधुनिक तंत्रज्ञान किसानों तक पहुँचाना।
११) स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाओं का ग्रामीण क्षेत्र में विस्तार करना।
१२) □ती को उद्यो□ का दर्जा देकर सुविधा प्रदान करना।
१३) राष्ट्र के बजेट में खेती का स्वतंत्र बजेट बनाकर अधिक पूँजी प्रदान करना।
१४) □ती क्षेत्र में सबसिडी का प्रमाण बढाना।
१५) □ती संबंधी ज्ञान स्कूल से ही प्रदान करना।
१६) □सानों के बच्चों के लिए शिक्षा में आरक्षण की सुविधा देना।
१७) ६० साल से ज्यादा आयु के किसानों को पेन्शन योजना शुरु करना।

संदर्भ सूची (References) :-

1. Accidental Deaths & Suicides in India. (1997-2012), National Crime Records Bureau, Ministry of Home Affairs.
2. Mohanty B.B., (1999) Suicides of farmers in Maharashtra, Review of Development & Change, 6(2) 146-188.
3. Ajay Dandekar & Other (2005) Causes of farmers suicides in Maharashtra-An Enquiry.
4. Mishra ShriJit & Other (2006) Suicides of farmer in Maharashtra.
5. Dr. Kurulkar R.P. & Other (2006), The Report on farmer suicides in Marathwada Region of Maharashtra State.
6. Meeta & Rajivlochan (2006) Farmers Suicides, facts & Possible policy Interventions.
7. P. Sainath (2007), The Hindu, 12-15 Nov. 2007.
8. स्वामीनाथन एम. एस. (२००५) कृषी क्षेत्राचे पुनरुज्जीवन आणि कृषक समृध्दी, शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या चिंतन आणि उपाय, संपादित किताब, सुमेरु प्रकाशन, डोंबिवली पुर्व, पृ. क्र. १७-३२.
9. नरेंद्र जाधव (२००८) शेतकरी आत्महत्या आणि कृषी क्षेत्रापुढील आव्हाने : कर्जमाफी आणि समग्र महाराष्ट्र समतोल [ृषी वि[ास [ृती योजना अहवाल, जुलै २००८.
10. ज्ञानदेव तळूले व ओंकार रसाळ (२००९) महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यांचे विविधांगी वास्तव, समाजप्रबोधन पत्रिका, जुलै-डिसें. २००९ पृ. क्र. ३५१-३६५.
11. भगवान डोंगरे (२०११) जालना जिल्ह्यातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यांचा समाजशास्त्रीय अभ्यास, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विद्यापीठात सादर शोध प्रबंध, डिसें. २०११.
12. सतिश गव्हाणे (२०१२) कृषी क्षेत्रातील पेचप्रसंग आणि शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या, चिन्मय प्रकाशन औरंगाबाद.

रामेश्वर एम. मोरे
एस.बी.पी. कॉलेज, मंद्रुप,ता.द. सोलापूर,जि. सोलापूर, महाराष्ट्र.